आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 347 ARYA SABHA MAURITIUS *11th Nov. to 26th Nov. 2016*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

अन्धकार पर रोक-थाम

NE LAISSONS PAS PREVALOIR LES TENEBRES DE L'IGNORANCE

ओ३म् ।। अन्धन्तमः प्रविशन्ति येसम्भूतिमुपासते ।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्या रताः ।। *यजुर्वेद ४०/९*

Om ! Andhantamaha pravishanti ye asambhutim upāsate.
Tato bhuya iva te tamo ya u sambhutyām ratāha.

Yajur Véda 40/9 & Ishopanishad 1/9

Glossaire / Shabdārtha

Ye – A la recherche du bonheur éternel, ceux qui au lieu de vénérer Dieu, **Upasate** – adorent ou s'adonnent à la culte de la nature (le soleil, la lune, les montagnes, les rochers, les étendus d'eau, la mer, les rivières, les animaux, les plantes, les idoles, les forces de la nature, etc.), **Pravishanti** – se trouveront enveloppés, **Andham** – d'une épaisse couche, **Tamaha** – d'obscurité ou des ténèbres de, **Avidyām** - l'ignorance (le malheur, la souffrance, la malchance), **Asambhutim** – (i) La nature ('*prakriti*' ou la matière élémentaire primordiale) qui est éternelle, impérissable et incréée; (ii) Attitude anti-sociale – la division, l'égoïsme, l'isolement, les plaisirs sensuels, les actes répréhensibles; (iii) La rénonciation du monde matériel et la pratique de l'ascétisme seulement; **Sambhutyām** – (i) la création du monde : ce processus qui comprend la consolidation et l'assemblage de tous les éléments de la nature par le Seigneur; (ii) le comportement humain, vivre en société; (iii) la pratique de la spiritualité, la dévotion; **Ya u** – et ceux qui, **Ratāha** – tirent avantage personnel par la tricherie, s'adonnent aux plaisirs sensuels, à l'égoïsme et jouissent de tous les plaisirs du monde entre autres, **Te** – eux, ils iront / ils se trouveront, **Tamaha** – dans beaucoup plus d'obscurité (malheur, souffrance, peine), **Tatta bhuyāha** – que les autres.

cont. on pg 4 **N. Ghoorah**

धन्यवाद एवं बधाई

डॉ० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न, प्रधान आर्य सभा

२९ अक्तूबर २०१६ को आर्य सभा ने पोर्ट लुई आर्य ज़िला परिषद् के सहयोग से आर्य भवन, पोर्ट लुई में बड़े ही उत्साहवर्धक वातावरण में दीपावली पर्व सैकड़ों धर्मप्रमी आर्य सदस्यों एवं गण्यमान्य जनों की उपस्थिति में मनाया। पंडित धर्मेन्द्र रिकाय और पंडिता सत्यम् चमन जी द्वारा अनेक पंडित-पंडिताओं के सहयोग से अपराह्नकाल में यज्ञ बड़े भक्ति-भाव से प्रारम्भ किया गया। यज्ञोपरान्त कार्यक्रम के दूसरे भाग के अन्तर्गत श्रीमान् और श्रीमती राजाकुमार कोटक, पंडिता इंदिरा माटर और साथियों ने अपने मधुर भजनों से सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर के मुख्य अतिथि थे मॉरीशस गणतन्त्र के उपराष्ट्रपति महामहिम श्री परामासिवम पीले वायापुरी, जी.ओ.एस.के और विशिष्ट अतिथि थे पोर्ट लुई महानगर के महापौर श्री उमर खोलीगान जी, सांसद श्रीमती रुबीना जादू जी, विश्व हिन्दी सचिवालय के महासचिव डॉक्टर विनोद कुमार मिश्र जी, इन्दिरा गांधी सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक, श्री संजय शर्मा जी और महात्मा गांधी संस्थान की हिन्दी-पीठ पर आसीन डॉक्टर उमेशकुमार सिंह जी।

वेद-प्रचार समिति के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि, प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर जी तथा पुरोहित मण्डल के अध्यक्ष पंडित यशवन्तलाल चूड़ोमणि जी ने आर्य सभा का प्रतिनिधित्व करते हुए अपने सारगर्भित सन्देशों से सभी श्रोताओं को प्रभावित किया। भारत से आई हुई ऋषिका आत्मदीक्षिता जी का सन्देश मनभावन था। कार्य-संचालक थे उपमन्त्री रवीन्द्रसिंह गौड जी।

प्रति वर्ष दीपावली के शुभावसर पर प्रत्येक ज़िले के आर्य सेवकों को आर्य सभा सम्मानित करती आई है। इस वर्ष निम्नलिखित सेवकों को 'आर्य भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गयाः- श्री रवीन्द्रसिंह गौड, श्री इन्द्र देव बालगोबिन और श्रीमती रत्नभूषिता पुचुआ। इन सभी लोगों का संक्षिप्त परिचय डॉ० जयचन्द लालबिहारी जी ने दिया और उपराष्ट्रपति महामहिम श्री परामासिवम पीले वायापुरी ने इन्हें ऊपरी एवं शिल्ड प्रदान करके सम्मानित किया।

आर्य महिला मण्डल की मंत्रिणी, श्रीमती सती रामफल जी ने ज़िले के स्तर पर सम्मानित होने वाले निम्नलिखित आर्य सेवकों का परिचय दिया :- १. ब्वा शेरी रोड, मोका निवासी श्री कृष्णलाल मोहित जी का, २. सावान ज़िले के रिव्येर दे ज़ाँगी ग्राम में बसने वाले पंडित लोकमान मुकलाल जी का, ३. ब्लैक रिवर के पंडित हीमावथ झपसी जी का, ४. रोज़हिल निवासी पंडित बासदेव चन्नू जी का, ५. त्रिओले ग्राम की निवासिनी श्रीमती देओरानी मंगरू जी का, ६. फ़्लाक ज़िले के ब्रिज़े वेरजियेर गाँव के निवासी श्री ब्रह्मऋषि नागा जी का, ७. प्लैन मायाँ की रहने वाली श्रीमती तेवरी बितोरियल जी का, ८. पोर्ट लुई ज़िले की श्रीमती हेमावत दीपन जी का,९. गुडलैण्ड्स निवासी

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

जीवन-निर्वाह

जीवन निभाने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान अति आवश्यक हैं। इनकी प्राप्ति के लिए रुपयों की ज़रूरत होती है। पुरुषार्थ करने से जीने के आवश्यक साधन प्राप्त होते हैं । मेहनत की कमाई हुई सम्पत्ति से जिन्दगी की गाड़ी आगे बढ़ती जाती है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान के लिए हर एक व्यक्ति को अति परिश्रम करना पड़ता है। पुरुषार्थ के बिना जीवन-यात्रा करना असम्भव है।

हमारे देश की आबादी लगभग साढ़े बारह लाख की है, जिनमें पचास प्रतिशत के करीब पुरुष और आधी आबादी महिलाएँ हैं। जो एक दूसरे के सहयोग से जीवन निबाहने में कार्यरत हैं। उनके कठोर परिश्रम से देश में सवाँगीण विकास हो रहा है।

आज बढ़ती आबादी के कारण हमारे देश में बेकारी की समस्या उत्पन्न हो गई है । हज़ारों जवान बेरोज़गार हैं, वे नौकरी की तलाश में भटक रहे हैं । साधारण व्यक्तियों के साथ-साथ कितने शिक्षित भी अपने विद्यालयों और विश्व-विद्यालयों से डिग्री प्राप्त करके बेकार बैठे हैं। हमारे हजारों गरीब परिवार अपनी संतानों को उच्च-शिक्षा प्रदान करने के निमित्त अपूर्व सम्पत्ति लगाकर बेहाल पड़े हैं। उधर हमारे बेरोज़गार जवानों का कठिन तप-त्याग निष्फल दिखाई दे रहा है, जो हम सभी देशवासियों और सरकार के लिए चिन्ताजनक है ।

देश में बेकारी की समस्या के अनेक कारण हैं, जिनमें देशी उद्योग धंधों में आर्थिक समस्याएँ, शक्कर के दामों में भारी गिरावट, विदेशी मुद्राओं में उतार-चढ़ाव, आयात-निर्यात में असमानता, बढ़ती आबादी इत्यादि। जिनके कारण निरन्तर कई कर्मचारी अपनी नौकरी खोते जा रहे हैं। इस गम्भीर समस्या का हल ढूँढ़ने में सरकार हर प्रकार की कोशिश कर रही है।

हमारी सरकार देशी और विदेशी पूँजीपतियों को प्रोत्साहित करके यहाँ अनेक उद्योग-धन्धे स्थापित करने की कोशिश में है, ताकि उन कारोबारों में बेरोज़गारों को जीविका मिल सके। सरकार की परियोजनाएँ सफल सिद्ध होगीं तो राष्ट्रीय विकास के साथ यहाँ के सभी नागरिकों के जीवन निर्वाह में सुधार आएगा ।

आज हमारे जीवन में धन कमाने की अति आवश्यकता हो गई है। क्योंकि जीविका निमित्त सारे साधन ढूँढ़ने के लिए बहुत खर्च करना पड़ता है। इस महँगाई के ज़माने में बेकार होने से लोग दुखी हैं। वे कई प्रकार की समस्याओं से जूझ रहे हैं। जीवन निबाहने में बाधाएँ उत्पन्न हो रही हैं।

चालीस से पचास हज़ार बेकार नागरिकों के होते हुए यह लगभग पैंतीस हज़ार विदेशी कर्मचारी नौकरी कर रहे हैं। दस हज़ार से अधिक विदेशी पूँजीपती (Board of Investment) द्वारा यहाँ नागरिकता प्राप्त कर चुके हैं। ऐसी परिस्थिति में हमारे जवानों को अपनी निपुणता दिखाकर पूरा परिश्रम करना चाहिए ताकि उनकी जीविका विदेशी कर्मचारी न छीन सके। अपना अधिकार विदेशियों को देकर भूखा मरना नादानी है।

बेकारी की प्रतिक्रिया पड़ने से हमारे देश में हड़ताल, अशान्ति, डकैती, हलचल आदि मुसीबतें होने की सम्भावना है। इस शान्त और सुन्दर देश में रोज़ी-रोटी के अभाव में लूट-मार और दुराचार बढ़ सकेंगे।

देश की ऐसी स्थिति में हम अपने आर्य युवक-युवतियों को यह सलाह देते हैं कि आप आर्यसमाज के सिद्धान्तों को अपनाकर सादा जीवन और उच्च विचारों के साथ जीवन निबाहने की अच्छी आदत डालें। एक दिन ज़रूर आपके जीवन में प्रकाश होगा। परमात्मा की कृपा से हमारा देश उन्नति की ओर अग्रसर होता रहे और आपका भावी जीवन मंगलमय हो जिस मातृ-भूमि पर आपका जन्म हुआ है, उसी भूमि पर आप जीवन-निर्वाह सुगमता पूर्वक अवश्य ही होगा ।

बालचन्द तानाकूर

पृष्ठ १ का शेष भाग

श्री ज्वाला कालियाचेटी जी का।

कार्यक्रम सायंकाल छः बजे श्रीमती यालिनी यालापा जी द्वारा धन्यवाद-समर्पण एवं पंडित-पंडिताओं द्वारा शांतिपाठ के पश्चात् बड़ी प्रसन्नता पूर्वक सम्पन्न हुआ। अन्त में सभी का सहभोज से सत्कार किया गया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा के मानेजर, श्री सुबिराज सोब्रन और दफ़्तर के सभी कर्मचारियों ने बड़ा सहयोग दिया। हमारे सदस्य-सदस्याओं ने भारी संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिये। एम०बी०सी० ने इस कार्यक्रम का टेलीविजन पर सीधा प्रसारण किया। फलतः घर बैठे दर्शकगण सभा की इस धार्मिक गतिविधि को देख सके। सभी को हमारा धन्यवाद है और सम्मानित सदस्य-सदस्याओं को हमारी शत-शत बधाई।

गंगा-स्नान वा गंगा नहान

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

पिछले सोमवार दि० १४.११.२०१६ को कार्तिक पूर्णिमा के मौके पर गंगा स्नान मनाया गया। यद्यपि भारत वर्ष को छोड़कर किसी भी देश में गंगा नाम की नदी नहीं है फिर भी दुनिया भर में जहाँ जहाँ भारतीय मूल के लोग बसते हैं वहाँ-वहाँ यह पावन पर्व जल के सम्मान में मनाया गया जैसे दीपावली मनाते हैं अग्नि, आग या रोशनी व प्रकाश के सम्मान में मनाया जाता है।

आर्य सभा के तत्वावधान में देश की सभी परिषदों की ओर से टापू भर के ११ समुद्रतटों पर यज्ञ तथा महायज्ञ सम्पन्न किया गया।

प्लेन विलियेम्स ज़िला परिषद् की ओर से फ्लीक-आँ-फ्लाक में १६ कुण्डों का महायज्ञ किया गया। परिषद् के मुख्य एवं कनिष्ठ पुरोहित-पुरोहिताओं का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ।

परिषद् की भजन मण्डली द्वारा रोचक एवं ज्ञानवर्धक भजन पेश किये गए। प्रोग्राम के अन्तर्गत भजन के अलावा भाषण भी हुए।

परिषद् के दोनों वरिष्ठ पुरोहितों द्वारा सुन्दर भाषण हुए। एक ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला और दूसरे ने जल की महिमा पर विशद-रूप से अपने विचार पेश किये।

आर्य सभा के मान्य प्रधान डॉ० रुद्रसेन निऊर के साथ महामंत्री सत्यदेव प्रीतम, उपप्रधान बालचन्द तानाकूर, उपमन्त्री श्रीमती यालिनी और अन्तरंग सदस्या श्रीमती रत्नभूषिता पुचुवा उपस्थित थे।

परिषद् के प्रधान श्री रविन्द्रसिंह गौड ने यज्ञ के तत्काल बाद उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए धन्यवाद दिया अपनी उपस्थिति के लिए ।

महामन्त्री ने अपने लघु भाषण में गंगा, जो भारत की सबसे बड़ी और लम्बी नदी है, उसके जल के महत्व को बताते हुए कहा कि यह सच है कि गंगा के जल में औषधि विद्यमान है जिससे शारीरिक रोग या विकार का निवारण होता है । खेती-बारी के लिए जो फायदा होता है वह अद्वितीय है।

हमारे लिए गंगा जल का द्योतक है। उसके प्रति हमारी कृतज्ञता होनी चाहिए । साल में एक बार उसका सम्मान होना अनिवार्य है। जल ही जीवन है ।

कौन सफल होता है ?

कार्य करते समय अभाव, बाधा, विरोध, आरोप, विश्वासघात, कष्ट आदि प्रतिकूलताएँ आती ही रहती हैं। जो इन का समाधान निकाल लेता है या सहन कर लेता है या इनको टाल देता है। वह व्यक्ति सफल हो जाता है।

मेरे ये हाथ

डॉ० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ

मेरे ये हाथ
जो निर्माण, सर्जना का काम कर सकते
विध्वंश करने के लिए कभी न उठे
तरासकर, रंग चढ़ाकर कुरूपता पर
सौन्दर्य की सृष्टि कर सकते
तो कभी सौन्दर्य पर कुरूपता का
धब्बा न पोते
ये हाथ किसी की खाली झोली भर दे

किसी की भरी तिजोरी खाली
करने के लिए न उठे
हाथ उठाकर उनके लिए दुआएँ माँगूँ
जो देश की रक्षा के लिए लड़ते हैं
जो भूखों के पेट पालने के लिए
कड़कती धूप में कड़ी मेहनत करते हैं
मेरे हाथ कभी रोटी के टुकड़ों के लिए
न फैले
रोटी खाऊँ तो बस इनकी ही कमाई हुई।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं । लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - काठमांडू २०१६ - सफलतापूर्वक सम्पन्न

श्री हरिदेव रामधनी, आर्य रत्न - उपप्रधान आर्यसभा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी परम्परानुसार साल २०१६ के अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन २० से २२ अक्तूबर २०१६ को नेपाल की राजधानी काठमांडू में किया। २०१२ के अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, जो दिल्ली में लगा था, उसमें सार्वदेशिक सभा ने यह निर्णय लिया था कि भविष्य में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों का आयोजन उन देशों में जहाँ आर्यसमाज सुव्यवस्थित रूप से चल रहा है, न करके उन राष्ट्रों में किया जाय, जहाँ आर्यसमाज को विकसित करने के लिए प्रोत्साहन की अति आवश्यकता है। इसी लक्ष्य से २०१३ में डरबन में, २०१४ में सिंगापुर और थायलैंड में तथा २०१५ में ऑस्ट्रेलिया में आयोजन किया गया।

इस साल नेपाल में सार्वदेशिक सभा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन करने का निर्णय सराहनीय रहा, क्योंकि नेपाल याज्ञवल्क्य, जनक, गार्गी, मैत्रेयी और गौतम बुद्ध जैसे महान् मनीषियों, विदुषियों एवं समाज सुधारकों की जन्म भूमि रही है। मगर समय के साथ यहाँ की जनता वैदिक धर्म से दूर हो गई, परिणामस्वरूप अविद्या, अंधविश्वास और गरीबी ने विशालकाय रूप धारण कर लिया। यह त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन काठमांडू के टुंदिखेल मैदान में किया गया, जहाँ एक विशाल पंडाल बनाया गया था, जिसमें प्रतिदिन ३००० से अधिक लोगों ने भाग लिया।

इस महासम्मेलन की तैयारी में सार्वदेशिक सभा ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी। साथ ही स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने महीनों पहले नेपाल में रहकर तैयारी की। उन्होंने अभूतपूर्व कार्य किया। भारत से लगभग ५०० आर्य समाजियों ने भाग लिया और मॉरीशस वह दूसरा देश था, जिसने भारत के बाद १०० प्रतिनिधियों का शिष्ट मण्डल लेकर उस सम्मेलन को सफल बनाया। साथ ही आर्य सभा मॉरीशस एवं हमारी सभी प्रतिनिधियों के सहयोग से ६१,५०० भारतीय रुपये का आर्थिक दान भी दिया। इस सम्मेलन में दस से अधिक देशों ने भाग लिया।

प्रथम दिन कार्यक्रम एक भव्य प्रभात फेरि से शुरू हुआ, तत्पश्चात् महायज्ञ का अनुष्ठान हुआ, जिसमें आर्य सभा मॉरीशस से उपप्रधान श्री हरिदेव रामधनी सपत्नीक यजमान बने तथा हमारे पंडित एवं पंडिताओं को मंत्रपाठ करने का भी सुअवसर मिला। फिर ११.०० बजे से आलेख प्रस्तुति का सत्र शुरू हुआ। सम्मेलन का औपचारिक उद्घाटन नेपाल के राष्ट्रपति, श्रीमती विद्या देवी भण्डारी द्वारा किया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, महामंत्री श्री प्रकाश आर्य एवं संयोजक श्री विनय आर्य के अलावा प्रकाण्ड विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए, जिनमें आचार्य ज्ञानेश्वर, स्वामी सम्पूर्णानन्द, स्वामी सुमेधानंद, स्वामी देवव्रत, एवं अन्य संन्यासी, विद्वान् और विदुषियाँ भी थे। सभी वक्ताओं ने नेपाल के अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई जिन्होंने वैदिक धर्म के लिए शहीद होना स्वीकार किया था, मगर कभी झुके नहीं।

पहले दिन औपचारिक उद्घाटन सत्र आरंभ करने से पहले मॉरीशस के संगीत-सांस्कृतिक मंडली द्वारा भजन किए गए, जिससे सभी लोग मंत्र-मुग्ध हो गए। दूसरे दिन महिला सत्र में पंडिता विद्वन्ती जहाल के सुंदर आलेख की प्रस्तुति हुई, जिसमें उन्होंने महर्षि दयानन्द द्वारा निर्धारित महिलाओं के कर्तव्यों पर चर्चा की। अन्तिम दिन जो विदेशियों का सत्र था, उसमें मॉरीशस को सम्मानित करने के लिए उसका प्रारम्भ आर्य सभा के उपप्रधान श्री हरिदेव रामधनी जी के भाषण से किया गया, जिसमें उन्होंने आर्यसभा के सुव्यवस्थित प्रशासन पर प्रकाश डालते हुए डॉ० चिरंजीव भारद्वाज, स्वामी स्वतंत्रानंद, स्वामी ध्रुवानन्द आदि तपस्वी विद्वानों को श्रद्धांजलि अर्पित की, जिनकी कृपा से मॉरीशस में आर्यसमाज विकसित

हुआ। सार्वदेशिक सभा से उन्होंने अपील की कि आज समय की अति आवश्यक माँग है कि इस तरह के संन्यासियों, आचार्यों एवं अवकाश प्राप्त विद्वानों की टोली बनायी जाय, जो भारत के कोने-कोने में तथा विदेशों में जाकर समर्पित भाव से वैदिक प्रचार कर सकें। साथ में स्वामी सम्पूर्णानन्द जी को कोटिशः धन्यवाद दिया, क्योंकि जो काम उनके गुरु दादा स्वामी स्वतंत्रानंद ने मॉरीशस में किया था, वह काम वे आज नेपाल में कर रहे हैं, जो बड़ा ही प्रशंसनीय है। भावी योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि १ से ७ दिसम्बर तक अफ्रीकन देशों के युवाओं के साथ मॉरीशस में एक युवा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

व्रत का महत्व

पंडिता सविता तोकूरी, शास्त्री

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि । तच्छकेयम् । तेनध्र्यासमिदहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा । इदमग्नये इदन्नमम् ।।

व्रत का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। आर्यों का जीवन व्रतमय होता है। मानवता के विकास के लिए सत्य, अहिंसा, अस्तेय, प्रेम आदि गुणों की आवश्यकता होती है। व्रती व्यक्ति इन गुणों को अपने जीवन में धारण कर लेते हैं। यजुर्वेद का प्रारम्भ भी सत्य को जीवन में धारण करने के व्रत से हुआ है।

जब कोई आदमी व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा लेता है तब उसके पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहता है। जैसे कोई अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए व्रत लेता है। यज्ञ में परमात्मा को अग्निस्वरूप मानकर मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान प्रार्थना करता है कि हे परमेश्वर! मैं सत्य का व्रत लेना चाहता हूँ। मुझे उस व्रत के पालन करने की शक्ति दीजिए।

सत्य की हमेशा जीत होती है। सत्य को ग्रहण करने में और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। जो आदमी अपने व्रत में दृढ़ रहता है, वह निश्चय करता है कि चाहे कुछ भी हो जाये मैं हमेशा सत्य बोलूँगा। सच्चाई का साथ दूँगा। झूठ को कभी नहीं अपनाऊँगा। जो सच्चाई का साथ देता है, परमात्मा सर्वदा उसकी रक्षा करता है। उसे हर प्रकार का सुख मिलता है। वह अपने जीवन में प्रगति करता है। जीवन में आने वाली कठिन से कठिन विपत्ति का सामना करने में समर्थ होकर, हमेशा प्रसन्नचित्त रहता है। वही सबसे बड़ा भाग्यवान् होता है।

जो व्यक्ति झूठ बोलता है, उसे एक झूठ को छुपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं, और वह कई पापों का भागी हो जाता है।

व्रती आदमी झूठ से बचने के लिए परमात्मा से शक्ति के लिए प्रार्थना करता है, ताकि वह अपने व्रत का पालन कर सके। परमात्मा उसके व्रत की रक्षा के लिए उसे सामर्थ्य देते हैं। ब्रह्मचारी भी अपने ब्रह्मचर्य व्रत के पालन के लिए उपनयन संस्कार में यज्ञोपवीत धारण करता है, ताकि परमेश्वर उसे समर्थ बनाये और वह ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके नियमों पर चल सके। वह कई प्रतिज्ञाएँ करता है जैसे :– अपनी शक्ति की रक्षा करेगा। आलस्य से दूर रहेगा, अनुशासन का पालन करेगा आदि। यह ब्रह्मचर्याश्रम का व्रत है।

फिर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते समय पति-पत्नी भी कुछ व्रतों का पालन करने के लिए प्रतिज्ञा लेते हैं। जैसे पति एक आदर्श पति बनकर अपनी मेहनत से, ईमानदारी की कमाई से अपने परिवार का पालन-पोषण करेगा। वह शराब, सिगरेट, मादक द्रव्य से दूर रहकर बिना व्यर्थ में पैसा न गँवाकर अपने बच्चों के भविष्य की तैयारी करेगा। पत्नी भी यही प्रतिज्ञा करती है कि वह पतिव्रता स्त्री बनकर अपने गृह को स्वर्ग जैसा सुन्दर बनाकर अपने प्यार से सजाकर परिवार की देखभाल करेगी। वह जरावस्था तक अपने पति का के साथ देगी। इस प्रकार आज नारियाँ अपने घर को सँभालती हुई पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर नौकरी भी कर रही हैं। वे अपने पति का दाहिना हाथ बनकर परिवार को उज्ज्वल बना रही हैं।

वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम के भी कुछ ऐसे नियम हैं, जिन्हें वानप्रस्थी और संन्यासी को व्रत धारण करके पालन करना पड़ता है - जैसे – क्रोध न करना, झूठ न बोलना, संसार के किसी बन्धन में न पड़ना आदि।

हमें कर्म और वचन से अपने व्रत का पालन करना चाहिए तब परमात्मा भी हमारी सहायता करेंगे । तुलसी के शब्दों में श्री राम व्रत-पालन के सम्बन्ध में कहते हैं – **रघुकुल रीत सदा चली आई। प्राण जाये पर वचन न जाये।।** चाहे हमारे प्राण निकल जायें, पर हमने जो व्रत धारण किया है, उसके विपरीत कभी नहीं जायेंगे। व्रत ही द्वारा हम अपने जीवन की मंज़िल तक पहुँच सकते हैं ।

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदेय आप ।

अर्थात् जीवन में सत्यवादिता और सत्य का आचरण है तो तप करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सत्य से बढ़कर कोई और तप नहीं है। झूठ से बड़ा कोई और पाप नहीं।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए यजमान व्रती बनता है ।

आप के पत्र

'आर्योदय' का ३४३ अंक पढ़ा। श्री बालचन्द तानाकूर जी का लेख – 'आत्महत्या की रोक-थाम' में बड़े ही अच्छे विचार व्यक्त किये गये हैं। माना जाता है कि संसार में बहुत तनाव है, पर आत्महत्या समस्या का हल नहीं। श्री बालचन्द जी ने इसका हल बहुत अच्छे तरीके से 'आर्योदय' में लिखा है – इसे पढ़ने वाले समझ जाएँगे कि आत्महत्या एक पाप है।

प्राणों की रक्षा हर एक जीव करता है । यह परमात्मा की एक अनमोल देन है।

२ अक्तूबर सन् २०१६ के अंक में प्रकाशित श्री सत्यदेव प्रीतम जी का लेख - 'साधु रामनारायण' बहुत ही शोधपूर्ण है। हमारी पीढ़ी के लोग साधु जी को नहीं जानते। इस लेख के माध्यम से उनके जन्म से लेकर उनकी मृत्यु तक का उल्लेख हुआ है।

सत्यदेव प्रीतम जी ने साधु रामनारायण के सामाजिक कार्यों की खोज करके पाठकों को एक दिवंगत समाज सेवी का अच्छा परिचय दिया है। श्री सत्यदेव प्रीतम आर्योदय में एक के बाद एक महापुरुषों के जीवन के बारे में लिखते जा रहे हैं । इस तरह मानो गागर में सागर भर रहे हैं। इन महापुरुषों के जीवन-चरित्र से वर्तमान समाज बहुत कुछ सीख सकता है।

कविता सामा
पेची बेल एर, माहेवर्ग

पृष्ठ २ का शेष भाग

सार्वदेशिक सभा की उपस्थिति की माँग की। सार्वदेशिक सभा से पुनः अपील की कि एक 'Monitoring Committee' को स्थापित किया जाय, जिससे सभी देशों के कार्य का 'follow up' किया जाय ।

उस सत्र में श्री सत्यदेव प्रीतम जी का भी संदेश हुआ, जिसमें उन्होंने मॉरीशस आर्य सभा द्वारा की गई प्रगति पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल और उनके सदस्यों के इस सराहनीय कार्य के लिए बधाई दी। नेपाल में एक नया मंदिर बनाने की योजना के लिए मॉरीशस की तरफ़ से एक अच्छी रकम देने का वचन दिया, जिसमें श्री शेखर रामधनी जी ने अपने पिता की स्मृति में २५,००० रुपये दान देने का वचन दिया एवं श्री सत्यदेव प्रीतम जी ने १०,००० रुपये अपने भत्ते से

दान देने का वचन दिया।

सम्मान - सार्वदेशिक सभा ने श्री राजेन्द्र प्रसाद रामजी, आर्य सभा के कोषाध्यक्ष को उनके तीस साल लगातार अंतरंग सदस्य के रूप में सेवा के लिए 'आर्य रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया। साथ ही अन्य सभी मुख्य प्रतिनिधियों और पंडित/पंडिताओं को उपरना और स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया।

यह सम्मेलन अपने आप में एक सफल और ऐतिहासिक घटना थी और सार्वदेशिक सभा का प्रयत्न सराहनीय था। मॉरीशस के वैदिक प्रचार और सम्मेलन में उनकी भूमिका के लिए स्वामी संपूर्णानन्द एवं अन्य वक्ताओं ने भूरी-भूरी प्रशंसा की।

सम्मेलन के बाद भारत में आगरा आर्यसमाज ने हमारे शिष्ट मण्डल को बड़े ही स्नेहपूर्ण वातावरण में उपरना और महर्षि दयानन्द के चित्र से सम्मानित किया तथा सभी को मिठाइयाँ भी बाँटीं ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं जनकपुरी आर्यसमाज की तरफ़ से पूरे शिष्टमण्डल के सम्मान में एक भजन संध्या रखी गयी, जिसमें हमारी संगीत मंडली ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। खुशी से भारतीय प्रतिनिधियों ने मंडली के सदस्यों का भव्य स्वागत किया तथा साथ में सभी प्रतिनिधियों को उपरना से सम्मानित किया। उस अवसर पर आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री जी भी उपस्थित थे, जिन्होंने 'अध्यात्म पथ पत्रिका मंडल' की तरफ़ से श्री हरिदेव रामधनी, पंडित धनेश्वर दैबू एवं श्री भरत मंगरू को 'आध्यात्म रत्न' उपाधि से सम्मानित करते हुए शाल और सम्मान-पत्र प्रदान किया। करोल बाग आर्यसमाज में भी हमारे शिष्ट मण्डल को सम्मानित किया गया, जहाँ महामंत्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी का प्रभावशाली संदेश हुआ।

इस सम्मेलन से निश्चित ही नेपाल में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है और वहाँ के लोग वैदिक प्रचार को लेकर आगे बढ़ने के लिये तत्पर और उत्साहित भी हैं। यह श्रेय सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल और उनके मण्डल तथा स्वामी सम्पूर्णानन्द को जाता है।

गतांक से आगे

वेद-ज्ञान

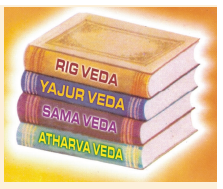

पंडित राजमन रामसाहा, आर्य भूषण

वेद नाम मान्त्रिक ज्ञान परमात्मा की कृपा से मानव समाज को देवताओं की ओर से प्राप्त हुआ है। वही देव गण हमारे आदि पुरुष हुए। उन्हीं लोगों को हम पितर मानते हैं। वैदिक मान्यता है कि चार देवता प्रथम आए मानव-सृष्टि के बीच ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद देने वाले हुए। वे परमात्मा की प्रेरणा से वेद बाँचते गए।

उन लोगों से मन्त्रों को सुनने वाले श्रोता उन मन्त्रों को स्मरण कर सकने और उनमें अर्थ दर्शन करने की समझ रखते थे। उन्हीं लोगों से मानव-समाज गठित हुआ है। उन्हीं पहले पहल आए हुए लोगों से भाषा बनी। मन्त्रों को परमात्मा के आदेश समझकर मानव समाज ने अपनाया और वैदिक समाज स्थापित हुए। उस स्थापित समाज से मानव समाज ने जीने के अपने संस्कार अपनाए।

जो लोग इस समाज के अनुकूल बने 'देव' कहलाए। इन्हें हम आर्य, सुर, परमात्मा-पुत्र, देव-सन्तान,ऋषि-सन्तानादि कहते हैं। जो लोग वैदिक ज्ञान से अन्यथा करने तथा देवताओं के शान्त संयम जीवन में खलल पैदा करने वाले बने, उन्हें राक्षस, असुर, दस्यु, म्लेच्छ। दानववादी पुरुष वचनों से सम्बोधन करने लगे। जीने के तरीक़े और व्यवहारों के कारण हम सम्मान या अपमान के शब्द बोलते थे। पर हम जिन्हें देवता या राक्षस कहते थे, सभी के सभी मनुष्य ही थे । आज के सभी हिन्दू आर्य सन्तानें हैं।

जितने अहिन्दू परिवार वैदिक-ज्ञान के अनुकूल जीते हैं, वे सबके सब आर्य हैं। सनातन-धर्मी या वैदिक-धर्मी दोनों के दोनों आर्य वंशज हैं और जितने हिन्दू भी वेद-विरुद्ध जीते हैं। वे सबके सब अनार्य हैं। जितने लोग सच्चरित्र वाले बन जाते हैं, आर्य हो जाते हैं। आदि मानव सृष्टि से वही नियम आज भी बराबर लागू है। यही कारण है कि वैदिक धर्म में व्यक्ति की सच्चरित्रता ही एक मात्र पहचान है। जन्म-जात का कोई महत्व नहीं रहता।

जब परमात्मा प्रलय करेंगे, तब जैसे डूबते हुए सूर्य की किरणें सूर्य ही को वापिस हो जाती हैं, वैसे ही वेद-ज्ञान परमात्मा में समा जाएगा। जब-जब प्रलय के बाद सृष्टि होगी, परमात्मा उसी वेद-ज्ञान के सहारे देवताओं को उत्पन्न करेंगे। उन्हीं देवताओं से वेद के साथ मानव समाज को प्रसारित करेंगे। परमात्मा देवताओं के कर्मों के न्याय पर वेद ज्ञान देकर फिर भेजेंगे। परमात्मा के न्याय पर इस सृष्टि के भले में वैदिक ज्ञानी आने वाली सृष्टि के प्रारम्भिक देवता बन पाएँगे।

Kriyatmak Yog Series (5)

Maharshi Patanjali's YOGA DARSHANAM

Practical applications of Yoga in daily life

Niyama …continued

Niyama (personal discipline) refer to the attitude we adopt toward the self as we strive to live spirituality (spiritual + reality).

2.43 Kāyā-indriya-siddhi-ashuddhi-kshayāta tapasah

Tapa or austerity involves elasticity in difficult times; we develop capacity to endure hunger-thirst, pleasure-pain, heat-cold, honour-dishonour…etc. Through training senses are tamed, mental blockages relieved, mental filth eliminated.

We attain mastery of the cognitive and active senses (pratyaahaara or introversion of the senses). We unshakably stand for truth and fight untruth, voice out for virtue and decry vice …become duty bound and shun irresponsible attitudes.

We regularly exercise our body and mind and attain a balanced state of mind, body and spirit with enhanced physical, mental / moral / spiritual strength.

The notion of tapa lies the idea we can direct our energy to enthusiastically engage life and achieve our ultimate goal of communion with the Divine. Tapa helps us to burn up all the desires that stand in our way of this goal. It is also about paying attention to what we eat, eating habits, body posture, breathing patterns …etc.

Introspection becomes part and parcel of our routine. We liberate ourselves from anger, frustration. Expounding on the aphorisms (sutras) of Yog Darshan Mahishi Vyaasa writes: *'Na tapasvino yogah siddhyati'*, i.e. austerity is a must to attain samaadhi.

2.44 Swādhyāyāt-ishta-devatā-samprayogah

Swādhyāya consists of the study of the Veda & allied scriptures which provides us with knowledge about the universal Vedic values; acquisition of such true spiritual knowledge along with mundane knowledge acts as a compass *(repères)* in life. Sages, learned / noble persons guide our learning to better understand concepts which empowers us to sift truth from untruth, virtue from vice and act dutifully.

Introspection is another element of Swādhyāya as it saves us from erring on the wrong path; we easily recognise our faults and weaknesses and avoid the pitfalls. True knowledge enables us to gauge our mental, vocal and physical actions, to find self-awareness in all our activities and efforts, to accept our limitations, to be centred and non-reactive to dualisms, to burn out unsolicited and unhelpful drifts. We spend quality time in prayers *(stuti-praarthanaa-upaasanaa)* and meditation, with deeper faith and devotion.

Another component of Swādhyāya is jaapa, i.e. chanting of the name of God (AUM) and Vedic hymns (mantras) which helps us to calm the mental and emotional activities, thus progress on the path of Yoga, communion with our Ishta Deva, i.e. the Omnipresent, Omniscient, All-just … the one-and-only God.

We also realise the inborn dormant force within us and empower ourselves to catch the inspiration from the Almighty which generally we tend to ignore or set aside in the rush of this tumultuous universe.

2.45 Samaadhi-siddhi-ishvara-pranidhaanaat

Ishvarapranidhaana is total submission to the Almighty and we accept him as the Creator / Generator, Operator and Dissolver of the universe. Self-awareness coupled with awareness of His characteristics, actions and attributes is a key driver to delve into deep meditation, to attain mastery, perfection and accomplishment, the state of perfect communion with the Supreme Soul – God :

➢ Omnipresent (present everywhere & at all times);

➢ Omniscient (All-knowledgeable & knows all our actions);

➢ All-just (no single action escapes His attention for which He will be giving us the appropriate reward or punishment);

➢ All-merciful (He continuously inspires us to act virtuously) …etc.

We shall act without prejudice and truly, like the toddler who acts fearlessly in front of his parents as he has an unbendable faith in his parents.

We shall see God, on a 24/7 basis, as the mother-father-friend-guru-source of eternal inspiration. We shall have no time to indulge in evil, pride and the likes. We shall act selflessly where our mind set would have already surrendered the fruits of the actions to GOD who has gracefully granted us the knowledge and other resources to carry out these actions. We shall stay away from the obsession for fame (*lokeishnaa*), lineage (*putreishnaa*) and wealth (*vitteshnaa*).

We shall be focused like Arjun who saw only the target (the bird's eye) in the archery competition. God's grace will place us in the orbit – discriminative intellect (*viveka*), detachment (*vairagya*) and move us out of suffering (*dukha nivaarana*).

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanācharya
(Snātak - Darshan Yog Mahavidyālaya)
Arya Sabha Mauritius

Bibliography :

Satyārtha Prakāsh, RigVedādi Bhāshya Bhumikā, (Maharishi Dayānand Saraswati)
Yoga Darshanam *(Maharishi Patanjali, Vyāsa Bhāshya & Yogārtha Prakāsh Swami Satyapati Ji Parivrājak)*

Valuable pearls from history pages

Late Mr Bissoonauth Seesurrun

It becomes our painful duty to announce the news of the death of Mr Bissoonauth Seesurrun the well known Notary Public, which occurred at his residence at Quatre Bornes on Sunday the 2nd May instant.

Mr Seesurrun was the first and the only Indian Notary of this colony practising since 1919. He died at the age of 48 years. He was held in high esteem by Indians and Non-Indians alike. He was a great supporter of Arya Samaj and also helped all the charitable institutions. Since some years he was appointed by Government as a member of the Quatre Bornes Board. When Dr Curé founded the Labour Party, he was entrusted with the post of treasurer.

His funeral took place on Monday amidst a large concourse of parents, friends and acquaintances. The funeral procession stayed some minutes at the Town Hall of Beau Bassin Board and hence proceeded by car to Port Louis cemetary.

We offer our deep sympathy to the bereaved family.

Extract from : **Arya Vir, 7th May 1937**

***Contributed by* : Pahlad Ramsurrun**

INTERNATIONAL YOUTH CONFERENCE

Theme : Youth Succession Planning

VENUE :
RISHI DAYANAND INSTITUTE, (RDI) PAILLES (MAURITIUS)

DATE : 1st to 6th December 2016

Arrival of participants from South Africa Wednesday 30th November at 7.30 pm.

Departure on Wednesday 7th December 2016 at 8.50 am

ARYA SAMAJ AFRICA YOUTH SUCCESSION PLANNING CONFERENCE, 1st December to 6th December 2016, Mauritius

Introduction

The Arya Samaj Africa that has members in countries of Africa, is holding its first Youth Conference cum Workshop that will be held in Mauritius from 30th November to 7th December 2016. The thrust of the conference will be on ways and means to involve the Arya Samaj Youths so that they become well prepared successors within the Samajs in their own countries. Practical measures to instill in the Youth a sense of legacy, ownership and succession planning will be discussed.

The conference will enable concerned members to discuss the objectives of the Arya Samaj, its present situation and how the Youth can play a more active role in revitalizing the Samaj. Topics like Vedic philosophy, education and values, youth empowerment, entrepreneurship, networking and cultural exchange will be discussed, and the way ahead worked out. Challenges and opportunities concerning Arya Samaj in this global village will be highlighted.

Amongst other sub-themes, the conference cum workshop will discuss the following main topics:

1. Our Objective and why we are here.
2. Present Status of the Arya Samaj and the Arya Yuvak Sangs.
3. What changes and improvements we can bring.
4. Entrepreneurship development and project fund raising.
5. The way ahead.

The overall format of the conference cum workshop will be the presentation of a few select papers on the above main topics, followed daily by workshops in working groups to enable full discussions on the topics and active participation of the youths so that they come up with viable recommendations that they can own and implement. The assistance and guidance of the main Arya Samaj will be instrumental.

The participants will also be given an opportunity to organize cultural sessions and visit important sites in Mauritius.

cont. from pg 1

Om ! Andhantamaha pravishanti ye asambhutim upāsate.
Tato bhuya iva te tamo ya u sambhutyām ratāha.

Yajur Véda 40/9 & Ishopanishad 1/9

Interprétation / Anushilan

Tout le monde est en quête du bonheur dans sa vie. Les personnes qui, à la recherche du bonheur éternel, au lieu de vénérer Dieu, se consacrent à l'adoration ou s'adonnent au culte de la nature (à l'adoration des idoles entre autres) en la prenant pour l'Être Suprême dans leur ignorance, d'autres personnes qui s'isolent en renonçant aux plaisirs du monde matériel et s'engagent seulement dans l'ascétisme, et bien d'autres qui manifestent des attitudes antisociales, telles que la division, l'égoïsme, la violence et autres actes répréhensibles, elles se trouveront toutes dans une obscurité épaisse, c'est-à-dire, dans le malheur, la souffrance et la peine dans leur vie.

Certains gens pensent que l'univers et même l'âme ont été créés par la nature. Ils nient l'existence de Dieu. Ils passent tout leur temps en quête des plaisirs du monde matériel, à accumuler la richesse et à chercher le renom ou la célébrité à travers le travail social en négligeant leurs propres familles. Il y a aussi ceux qui se dévouent uniquement au spiritualisme.

Tous ces gens ne vont jamais atteindre le bonheur éternel. Ils finiront par se trouver dans une obscurité extrême, en d'autres mots, s'engouffreront dans le malheur, la peine et la souffrance.

Ceux qui adorent la nature ou la richesse matérielle le font avec le but d'atteindre le bonheur éternel. Ils sont dans l'obscurité, voire dans l'ignorance et ne réussiront jamais par ce genre de dévotion.

Réussira seul celui qui vit en collaborant avec la société et en se dévouant à Dieu – Le Seigneur de l'univers qui est unique en son genre. Sachons qu'il y a trois entités éternelles et incréées dans le monde – Dieu (Ishwar), L'âme (jiv), et la matière élémentaire primordiale (prakriti).

Selon les enseignements des Védas, la matière élémentaire primordiale est inerte / sans vie et en existence, et elle est appelée 'sat', l'âme est en existence (sat) et conscient (*chit*) de ce fait elle est appelée 'sat-chit', et tandis que Dieu qui existe (sat), qui est conscient (*'chit'*), et il est le détenteur du bonheur, de l'harmonie parfaite et de la félicité éternelle (ānand). De ce fait Il est dénommé : *« sat–chit-ānand »*.

Pourquoi l'homme doit-il adorer Dieu ? C'est pour trouver le bonheur éternel (*ānand*) qui lui manque.

Pour atteindre le but ultime de la vie (*moksha*) l'homme doit se consacrer à la spiritualité (*Bhakti*) et à l'ascétisme (*vairāgya*) car ces deux activités se complémentent pour le rapprocher du Seigneur afin qu'il puisse entrer en communion parfaite avec Lui et goûter au bonheur suprême.

Tout ceci devient possible car ces pratiques dissipent les ténèbres de l'ignorance de notre esprit et de notre âme L'ascétisme nous débarrasse de tous les mauvais penchants et la spiritualité purifie l'esprit et l'âme.